(1)

छायावाद का दार्शनिक आधार

स्नातक भाग - 3
हिन्दी (प्रतिष्ठा)
पंचम पत्र

एक ओर नवजागरण और नवजागरण के आविर्भाव की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक परिस्थितियाँ तो दूसरी ओर स्वच्छन्दतावादी चेतना के सहारे पश्चिम से प्रेरणा छायावादी कविता के आविर्भाव, इसके स्वरूप निर्धारण और इसके दार्शनिक आधार के निर्माण में इन सबकी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही है यही कारण है कि छायावादी कविता किसी एक दार्शनिक धरातल पर खड़ी नहीं है वरन इसके दार्शनिक धरातल का विस्तार वेदान्तवाद, नववेदान्तवाद और प्रकृति अद्वैतवाद से लेकर पश्चिम के उत्तर उदारवादी चिंतन स्वच्छन्दतावाद, मार्क्सवाद और मनोविश्लेषणवाद तक है।

छायावादी कवियों में विषय की सबसे बड़ी विविधता हमें निराला के यहाँ देखने को मिलती है। निराला की 'राम की शक्तिपूजा' पर अगर वेदान्ती अद्वैतवादी चिंतन का प्रभाव है तो दूसरी ओर अन्यान्य जिधर है उधर शक्ति' की मूल समस्या उस वेदान्तवाद को मानवतावाद के करीब ले जाती है वहाँ पर निराला विवेकानन्द के वेदान्ती मानववाद जिसे नववेदान्तवाद भी कहा जाता है, से प्रभावित दिखते हैं। नव-वेदान्तवाद वेदान्ती अद्वैतवादी चिंतन की सामाजिक परिप्रेक्ष्य में व्याख्या करता है इसलिए यह अपने स्वरूप में मानवतावादी है। इसी नवमानव वेदान्त वाद को उनके 'कुकुरमुत्ता' कविता में भी अभिव्यक्ति मिली है। यह रोटी

के साथ विचार शुद्धि के प्रश्न को लेकर चलता है और इसीलिए मार्क्सवाद की सीमाओं की स्वीकारोक्ति निराला को चिंतन और दर्शन के ~~प्रश्न को लेकर चलता और इसीलिए मार्क्सवाद की सीमाओं~~ की आवरण से बाहर निकालकर मानवतावाद के धरातल पर प्रतिष्ठित कर देती है। उनकी 'भिक्षुक', 'दान', 'बादलराग' जैसी कविताएँ कई बार शोषित-उपेक्षित वर्गों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को मार्क्सवाद से लेकर जोड़ देती है, लेकिन कुकुरमुत्ते में वे इसकी धज्जियाँ उड़ाकर रख देते। संदर्भ चाहे 'शक्तिपूजा' का हो या 'कुकुरमुत्ता' का दोनों ही जगहों पर निराला की समन्वयवादी चेतना अपने शिखर पर है। जिसका संबंध अगर ~~आदे~~

उनके वैष्णव संस्कार से जुड़ता है तो तुलसी की समन्वयवादी चेतना से भी।

प्रसाद जी की कविताएँ एक भिन्न दार्शनिक धरातल पर खड़ी थी। प्रसाद पर शैवागम अद्वैतवाद का प्रभाव है इसी के धरातल पर वे 'कामायनी' में भारतीय सांस्कृतिक ~~चेतना~~ चिंतन परंपरा की दुखवादी और आनंदवादी धाराओं को एक-दूसरे से सम्बद्ध करते हुए समरसतावादी दर्शन की प्रतिष्ठा करते हैं:—

"समरस थे जड़ या चेतन,
सुंदर साकार बना था
चेतना एक विलसती
आनंद अखंड घना था।"

लेकिन प्रसाद जी की कविता का दार्शनिक

धरातल यहीं तक सीमित नहीं है। उनकी नारी चेतना पर यदि मध्ययुगीन नारी आदर्शों का प्रभाव है, जिसका संबंध तद्युगीन संदर्भ में गाँधीवाद से जुड़ता है तो दूसरी ओर पश्चिम के उदार नारीवादी चिंतन से भी। 'कामायनी' में तो प्रसाद डार्विन के विकासवाद के प्रभाव को भी स्वीकार करते हैं और मार्क्सवाद के प्रभाव को भी। लेकिन अंततः श्रद्धा उसे मानवतावाद के उपकरण में तब्दील कर देती है :—

"शक्ति के विद्युतकण
जो व्यस्त विकल बिखरे हैं, हो निरुपाय
समन्वय उसका करे समस्त
विजयिनी मानवता हो जाय।"

स्पष्ट है कि यहाँ पर आकर अद्वैतवाद और मानवतावाद परस्पर घुल-मिलकर

नववेदांतवाद की ओर उन्मुख होने लगती है। इसके लिए प्रसाद को अपनी वैयक्तिक वेदना को विश्व-वेदना में तब्दील करना पड़ा। इसका प्रमाण है — 'आँसू' का दूसरा संस्करण, जिसमें प्रसाद अपनी वैयक्तिक वेदना पर आध्यात्मिकता के आवरण को चढ़ाते हैं —

"सबका निचोड़ लेकर तुम,
सुख से सूखे जीवन में
बरसो प्रभात हिमकण-सा
आँसू इस विश्व सदन में।"

यहाँ पर प्रसाद का पीड़ावाद का संबंध बौद्ध दुखवाद और गांधीवाद आत्मपीड़न के दर्शन से जुड़ता है जिसे मुख्यतः महादेवी वर्मा के यहाँ अभिव्यक्ति मिली है।—